Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पर्यटन और भारतीय समाज

डॉ. पूजा तिवारी*

* सह प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र) शासकीय महावि।ालय, बिछुआ, जिला छिंदवाडा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – पर्यटन और भारतीय समाज का सदैव से गहरा सम्बन्ध रहा हैं पर्यटन न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता हैं और रोजगार पैदा करता हैं बल्कि नगरीय और ग्रामीण समुदाय के आर्थिक और सामाजिक समावेश में भी योगदान देता हैं यह भारत की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ाने का कार्य भी करता हैं किन्तु इसके प्रबन्धन में सावधानी बरतने की जरूरत होती है ताकि स्थानीय समुदाय और पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव न पड़े।

शब्द कुंजी – पर्यटन, समाज, संस्कृति, आर्थिकता, रोजगार।

प्रस्तावना – पर्यटन वर्त्मान में एक उभरता हुआ उद्योग हैं किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को पर्यटन बेहद गहराई तक प्रभावित करता हैं भारत देश में पर्यटन उद्योग से सबसे ज्यादा राजस्व और रोजगार प्राप्त होता हैं वर्त्मान में सर्कार और गैर सरकारी संगठनों ने पर्यटन पर विशेष ध्यान दिया हैं जिससे सभी लोगो को बहुत लाभ पहुँच रहा हैं।

शोध उद्देश्य :

1. पर्यटन के विषय में विस्तार से जानना।
2. पर्यटन का विभिन्न पक्षों जैसे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक राजनैतिक आदि पर क्या प्रभाव पड़ता हैं यह जानने का प्रयास करना।
3. शासन प्रशासन सरकार द्वारा पर्यटन उद्योग को उच्च कोटि का बनाने हेतु किये गये प्रयासों को जानना।

परिकल्पना :

1. पर्यटन उद्योग से सरकार को ज्यादा आय प्राप्त होती हैं।
2. पर्यटन का समाज के विभिन्न पक्षों पर सकारात्मक प्रभाव के साथ साथ नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता हैं।
3. पर्यटन से स्थानीय लोगो को रोजगार मिलता हैं जिससे बेरोजगारी दूर होती हैं।

सबसे पहले हमे यह समझना होगा की पर्यटन क्या हैं– पर्यटन शब्द अंग्रेजी के टूरिज्म शब्द का हिंदी पर्याय हैं यह शब्द मूल रूप से लेटिन भाषा के टोरोस से लिया गया हैं जिसका अर्थ है एक प्रकार का औजार जो एक पहिये की भांति गोलाकार होता हैं यह गोलाकार पिन हैं इसी शब्द से यात्रा चक्र और पॅकेज टूर या एक मुश्त यात्रा का विचार सृजित हुआ जो की वर्तमान पर्यटन का मुख्य आधार हैं। टूरिजम शब्द के तहत वे समस्त व्यापारिक क्रियाये भी शामिल हैं जो पर्यटकों की जरूरतों की पूर्ती करती हैं पर्यटन– इसका तात्पर्य हैं आराम एवम ज्ञान प्राप्ति हेतु यात्रा प्रारंभ करना, देशाटन –विदेशों में मुख्यत य आर्थिक लाभ के लिए यात्रा करना, तीर्थाटन –धार्मिक लाभों के कारण यात्रा करना।

पर्यटक कौन हैं–विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार–'जब कोई व्यक्ति अपने परिवेश के बाहर चौबीस घंटे से अधिक किन्तु एक वर्ष से कम समय के लिए किसी निश्चित मंदी या रोजगार रहित गतिविधि के लिए जाता है या निवास करता हैं और उसका एक मात्र उद्देश्य यात्रा करना, आनंदित होना, नई–नई ऐतहासिक तथा सांस्कृतिक जानकारियां लेना और खरीददारी एवम आराम से समय व्यतीत करना हो तो उसे पर्यटक माना जाता हैं।'

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार–'पर्यटक वह व्यक्ति हैं जो यात्रा करता हैं अथवा वह व्यक्ति जो अपनी रूचि के लिए अथवा प्राकृतिक सौन्दर्य देखने आदि के लिए अनेक स्थानों का भ्रमण करता हैं।'

पर्यटन के प्रकार:

1. स्थायी पर्यटन गतिविधि
2. अस्थाई पर्यटन गतिविधि

पर्यटन के आधार पर वर्गीकरण :

1. सामाजिक एवम भौगोलिक आधार पर पर्यटन – यह एक प्रकार का आवासीय पर्यटन हैं जिसमे मख्य उद्देश्य सैर–सपाटा एवम मनोविनोद होता हैं।उदहारण के लिए भारत में कई लोग मनाली और शिमला स्नो लाइन अथवा कश्मीर में बसंत के मौसम में पतों के गिरने और फूलों के खिलने का आनंद लेने जाते हैं।

2. सांस्कृतिक पर्यटन – इसमें लोग विभिन्न किले और प्राचीन धरोहर देखने जातें हैं जैसे जयपुर, जोधपुर, आगरा दिल्ली आदि में घूमने जाते हैं। इसके अलावा राजस्थान का मरू उत्सव या केरल की नावों की दौड़, कुल्लू का दशहरा, दिल्ली हाट आदि।

3. धार्मिक पर्यटन – भारत में अधिकांश लोग पर्यटन करने वभिन्न धार्मिक स्थल जाते हैं जहाँ पूजा पाठ के साथ साथ प्रकति के दर्शन भी हो जाते हैं और पर्यटन सफल हो जाता हैं जैसे दक्षिण भारत में बालाजी मंदिर, मीनाक्षी मंदिर कोणार्क का सूर्य मंदिर आदि महाराष्ट्र में शिर्डी मंदिर शेगांव रामटेक मंदिर आदि जम्मू कश्मीर में वैष्णव देवी, मध्यप्रदेश में उज्जैन, दतिया पीताम्बर पीठ राजस्थान में माउन्ट आबू,बिहार में गया, उत्तर प्रदेश में अयोध्या, प्रयागराज आदि।

4. शैक्षणिक और स्वास्थ्य सेवा सबंधी पर्यटन – इसमें विद्यार्थी आदान –प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत भारत के अन्दर और विदेशों का भ्रमण शमिल

हैं।

इसी प्रकार देश के कुछ हिस्सों में विगत एक दशक से पारम्परिक भारतीय चिकित्सा केंद्र पञ्च कर्म, योग कर्म,स्पा आदि के साथ साथ स्वास्थ्य के लिए लाभदायक मौसम वाले प्रदेशों, स्थानों में भी पर्यटन बढ़ गया हैं।

5. **सम्मलेन और व्यापार पर्यटन –** इसके अंतर्गत अप्रवासी भारतीय सम्मलेन, विश्व हिंदी सम्मलेन, विश्व पुस्तक मेला, वस्त्र मेला, सरकारी सम्मलेन आदि आते हैं जिसमे भारत के प्रतिनिधि भाग लेते हैं इसी प्रकार से व्यापर से सम्बन्धित जैसे शिक्षा प्रकाशन, सैन्य रक्षा, पर्यावरण संधारण आदि।

6. **पर्यावरण एवम वन्य जन्तु दर्शन –** भारत में कई उतम प्रकार के नेशनल पार्क, अभ्यारण्य, जैव विविधता, चिड़ियाघर, जू आदि हैं इसके शौकीन लोग इन स्थानों में जाना पसंद करतें हैं।किलिमंजारों की पर्वत माला ग्रेट बेरियर रीफ ओड़िसा के कछुवा प्रजनन तट आदि क्षेत्रों में लोग जाना पसंद करतें हैं पर्यटन के ऐसे क्षेत्र को 'डार्क पर्यटन या डूम पर्यटन' कहा जाता हैं।

7. **पैकेज पर्यटन –** यह एक नवीन क्षेत्र विकिसित किया गया हैं इसमें होटल्स, हवाई कम्पनी, पर्यटन एजेंसी और ट्रांसपोटर आदि मिल कर पैकेज टूर का विशाल पैमाने पर आयोजन कर रहें हैं।

इसके अलावा भी आउट सोर्सिंग और बी पी ओ उद्योग द्वारा बड़े नगरो जैसे दिल्ली, मुबई, बेंगलुरु, हैदराबाद, चंडीगढ़ आदि में पर्यटन हेतु सेवाए प्रारंभ हैं।

8. **साहसिक पर्यटन –** यह उन लोगो के लिए हैं जो रोमांचक गतिविधियों में रूचि रखतें हैं जैसे कि हाईकिंग, रॉक क्लैयर्मिंग, बंजी जम्पिंग और रिवर राफ्टिंग आदि।

9. **कृषि पर्यटन –**इसमें लोग फार्म जीवन और ग्रामीण जीवन का अनुभव करने जातें हैं।

10. **समुद्री पर्यटन –** इसमें समुद्री तटो, द्वीप और ताटीय क्षेत्रों की यात्रा शामिल हैं।

इसके अलावा भी कई प्रकार के पर्यटन होतें हैं जैसे भोजन पर्यटन, खेल पर्यटन और विशेष रूचि वाले पर्यटन आदि।

भारतीय समाज –भारतीय समाज एक अनोखा और जटिल ताना–बाना हैं जिसमे सदियों पुरानी परम्पराएँ आधुनिकता के साथ साथ गुँथी हुई हैं यह एक ऐसा समाज हैं जो अपनी विविधता, लचीलेपन और सांस्कृतिक विरासत के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं।

विविधता में एकता – भारत की सबसे बड़ी खासियत इसकी विविधता में एकता हैं यह पर कोस –कोस में पानी और वाणी अर्थात बोली बदल जाती हैं यह विभिन्न धर्मो, भाषाओ, जातियों के लोग एक साथ मिल कर रहतें हैं यह विविधता सिर्फ सांस्कृतिक नही, बल्कि भौगोलिक और सामाजिक भी हैं उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र तटो तक, हर क्षेत्र की अपनी खास पहचान वेशभूषा, खान –पान और रीति –रिवाज हैं।

संयुक्त परिवार और सामाजिक सरंचना – भारतीय समाज का मुख्य आधार संयुक्त परिवार प्रणाली हैं जिसमे दो –तीन पीढियां साथ मिलकर एक छत के नीचे रहतें हैं हालाकिं पश्चिमी करण, औद्योगिकिकरण, नगरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण अब एकल परिवार का चलन बढ़ गया हैं, समाज को जाति और वर्ग में विभाजित किया गया हैं।

चुनौतियाँ और परिवर्तन– वर्तमान में भारतीय समाज कई चुनौतियों का सामना कर रहा हैं जैसे बढती असामनता, वर्ग भेद, आर्थिक असामनता, आधुनिकता आदि।

आध्यत्मिकता और धर्म – धर्म भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग हैं यहाँ विभिन्न धर्मो के लोग एक साथ निवास करतें हैं ?

जाति व्यवस्था – भारत में वर्ण व्यवस्था के आधार पर जाति व्यवस्था बनायीं गयी हैं किन्तु यह पर सैकड़ों जाति के लोग रहतें हैं यह पर जाति की जड़ें बहुत गहरी हैं

महिलाओं की प्रस्थिति– भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति समय के साथ साथ परिवर्तित होती रहती हैं वर्तमान में महिला सशक्तिकरण के कई आयाम हैं।

भाषाई विविधता – भारत में 22 से अधिक भाषाएँ मान्यता प्राप्त हैं जिनमे हिंदी मराठी, गुजरती, बंगाली, तेलगु, तमिल, उर्दू आदि प्रमुख हैं इसके अलावा सैकड़ों बोलिया भी भारत में बोली जाती हैं।

इस प्रकार से भारत विविधताओं से भरा देश हैं जंहा पर निम्न, मध्यम और उच्च आर्थिक वर्ग के लोग रहतें हैं भारत में इनमे से मध्यम और उच्च आर्थिक स्थिति के लोग पर्यटन पर विशेष रूचि रखतें हैं किन्तु कई राज्य सरकारों ने निम्न आर्थिक स्थिति के आम लोगो के बुजुर्गो के लिए धार्मिक पर्यटन की व्यवस्था कर रखी हैं समस्त धर्मो के धार्मिक स्थलों हेतु यह व्यवस्था की गयी हैं।

पर्यटन से सम्बन्धित आधारभूत सुविधाएँ :

1. **होटल –** इसके अंतर्गत अन्तराष्ट्रीय होटल, वाणिज्य होटल, सराये, क्लब, यात्री आराम स्थल, होस्टल मध्यस्तरीय आवास, अनुपूरक आवास आदि शामिल हैं।

2. **खान –पान –** रेस्टोरेंट, भोजनालय, रेलवे खान पान व्यवस्था, समुद्री खानपान अन्य भोजन कक्ष आदि।

3. **मनोरंजन स्थल –** संगीत नृत्य, नाटक, ध्वनि, लाइट प्रदर्शन, मयूजियम, लोकसंगीत, मठ, आश्रम आदि।

4. **ऐतेहासिक इमारतें –** धार्मिक भवन, सैनिक नागरिक भवन, रण भूमि स्मारक, विभिन्न प्रकार के किले, महल, बावड़ियाँ, झरोखे, जल महल, संग्रहालय, पुस्तकालय, अवशेष आदि।

5. **क्रीडा सुविधा –**जल क्रीडा, स्वीमिंग पूल, बंदरगाह, आखेट, पर्वतारोहण, बर्फ पर स्केटिंग, इनडोर गेम्स, आउटडोर गेम्स, गोल्फ कोर्ट, हॉर्स रैयडिंग आदि।

6. **खरीददारी केंद्र –** भारतीय हस्तकला केंद्र, वाणिज्य केंद्र, खुले बाजार आदि।

7. **वितीय संस्थाएं –** बैंक, डाकघर, दूरभाष, बीमा कम्पनी आदि।

8. **प्रेस माध्यम –** प्रेस, आकाशवाणी, दूरदर्शन 'यात्रा मार्गदर्शक', प्रकाशन केंद्र आदि।

9. **यात्रा के साधन –** रेल, बस, हवाई जहाज, टूरिस्ट बस, टैक्सी, कैब, ऑटो रिक्शा, अन्य साधन।

पर्यटन का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक पक्षों पर पड़ने वाले प्रभाव :

1. **सामाजिक प्रभाव –** पर्यटन से विभिन्न समाजों के बीच आपसी समझ और भाईचारे की भावना बढती हैं लोग एक दुसरे के समाज को समझने लागतें हैं एक दुसरे की जीवन सहिली, भाषा, सामाजिक स्थिति आदि को समझने का अवसर मिलता हैं यह स्थानीय समुदायों को पर्यटकों से मिलने

और अपने विचार साझा करने में मदद करता हैं जिससे सामाजिक सम्बन्ध मजबूत होतें हैं।

2. **आर्थिक प्रभाव –** पर्यटन का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ता हैं यह रोजगार के अवसर भी देता हैं साथ ही प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उद्योगो को भी बढ़ावा देता हैं पर्यटन से विदेशी मुद्रा प्राप्त होती हैं जिससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती हैं यह स्तानीय व्यसायों जैसे हस्तशिल्प, कृषि उत्पाद की मांग को बढ़ता हैं यह आय का सबसे बड़ा साधन हैं भारत के कई पर्यटन स्टाल और स्मारक जैसे ताजमहल आदि से सबसे ज्यादा राजस्व प्राप्त होता हैं विदेशी पर्यटकों का मुख्य आकर्षण राजस्थान, उतरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात आदि होतें हैं जो सरकार को आर्थिक रूप से मजबूत बनातें हैं।

3. **सांस्कृतिक प्रभाव –** पर्यटन सांस्कृतिक आदान –प्रदान को बढ़ावा देता हैं जब पर्यटक किसी स्थान पर जातें हैं तो वो अपनी संस्कृति, भाषा, व्यवहार को भी साथ लातें हैं जो मेजबान संस्कृति को प्रभावित करता हैं इससे लोक कला, संगीत, परम्परा का सरक्षण भी होता हैं।

4. **राजनैतिक प्रभाव –** पर्यटन नीतियों का देश की राजनीति पर सीधा असर पड़ता हैं पर्यटन से मिलने वाले राजस्व का उपयोग आधारभूत संरचना जैसे सड़कों, हवाईअडे, होटल के विकास में किया जाता हैं।

शासन और प्रशासन द्वारा पर्यटन उद्योग को उच्च कोटि का बनाने हेतु किये गये प्रयासों का विवरण द भारत सर्कार और राज्य सरकारों ने पर्यटन उद्योग को उच्च कोटि का बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रयास किये हैं और कर रहे हैं जिनमे बुनियादी ढांचे का विकास और विशेष योजनायें शामिल हैं ?

1. **स्वदेश दर्शन योजना –** यह योजना थीम पर आधारित हैं जैसे बौद्ध सर्किट, हिमालयन सर्किट, ताटीय सर्किट अदि।इसका मुख्य उद्देश्य बेहतर कनेक्टिविटी और सविधाओं के साथ साथ इन क्षेत्रों में रोजगार और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना हैं स्वदेशी दर्शन 2.0 में सरकार ने गंतव्य केन्द्रित दृष्टिकोण को अपनाया हैं जिसमे सतत और जिम्मेदार पर्यटन को बढाया जा रहा हैं।

2. **प्रसाद योजना** PRASHAD, तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक, विरासत सवर्धन अभियान का उद्देश्य तीर्थस्थलो और विरासत स्थलों के विकास और सौन्दर्यीकरण पर ध्यान केन्द्रित करना हैं।

3. **देखो अपना देश योजना –** यह पहल भारतीय नागरिकों को देश के भीतर यात्रा करने और घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहन देने हेतु हैं।इसके तहत वेबिनार और जागरूकता अभियान चलायें जातें हैं।

4. **अतुल्य भारत –** यह एक वैश्विक विपणन अभियान हैं जो भारत की सांस्कृतिक, ऐतहासिक और प्राकृतिक विरासत को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के समक्ष प्रस्तुत करता हैं।

5. **ई –वीजा सुविधा –** कई देश के नागरिको के लिए ई –वीजा की सुविधा शुरू की गयी हैं, जिससे भारत आने वाले पर्यटकों के लिए वीजा प्रक्रिया सरल और तेज हो गयी हैं।

6. **उडान योजना** UDAN, इसके अंतर्गत हवाई संपर्क बढ़ाना, सडक निर्माण, रेलवे स्टेशन का कायाकल्प, हवाईअडे की संख्या बढ़ाना और विकास करना आदि शामिल हैं।

7. **अतुल्य भारत पर्यटक सुविधाकर्ता प्रमाणन कार्यक्रम** IITF – यह एक ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम हैं जिसका उद्देश्य पर्यटन स्थलों पर प्रशिक्षित और पेशेवर गाइड का एक पूल तैयार करना हैं।

8 **डिजिटल प्लेटफार्म –** पर्यटन मंत्रालय ने इसके अंतर्गत इनक्रेडिबल इंडिया कंटेंट हब जैसे प्लेटफार्म रखें हैं यह उच्च गुणवत्ता वाली छवियों, फिल्मों और ब्रोशरो का भंडार हैं जो पर्यटकों के लिए जानकारी आसानी से पहुचता हैं।

9 **निधि पोर्टल** NIDHI, – नेशनल इंटिग्रेटेड डेटाबेस ऑफ होस्पिटैलिटी इंडस्ट्री पोर्टल भी पर्यटन के डिजिटलकरण और व्यापार करने में आसानी को बढ़ावा देता हैं।

10 **पर्यटन पुलिस योजना –** पर्यटकों की सुरक्षा और विश्वास बढ़ने के लिए लोकप्रिय पर्यटन खेत्रों में समर्पित पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया हैं।

11 **अपनाओ –विरासत योजना –** इस योजना का उद्देश्य निजी क्षेत्र की भागीदारी के माध्यम से स्मारकों और विरासत स्थलों का रख –रखाव करना हैं।

12 **आतिथ्य और पर्यटन क्षेत्र के लिए आपातकालीन ऋण सुविधा** ECLGS, – महामारी जैसी विपरीत परिस्थितियों में पर्यटन क्षेत्र को सहारा देने के लियें आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना जैसी वित्तीय सहायता प्रदान की गयी हैं।

इनके अतिरिक्त भी राज्य सरकारों द्वारा समय समय पर अपने राज्यों के पर्यटक स्थलों के प्रचार –प्रसार हेतु प्रसिद्ध व्यक्तियों को राज्य का ब्रांड अम्बेसडर बनाया जाता हैं जैसे गुजरात के लियें अमिताभ बच्चन जी या मध्यप्रदेश के लिए पंकज त्रिपाठी जी और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तो दुबई सरकार ने दुबई का ब्रांड अंबेसडर भारतीय अभिनेता शाहरुख खान जी को बनाया हैं।

पर्यटन के क्षेत्र में भारत में नये कल्चर

1. **क्रूज हॉलिडे कल्चर –** यह पहले सिर्फ उच्च वर्ग का लक्जरी सपना माना जाता हैं अब यह मिडिल क्लास परिवारों के लिए भी आसान विकल्प बन गया हैं लोग अब बीस हजार रुपयें से शुरू होने वाले डोमेस्टिक क्रूज से लेकर पचास हजार रुपयें के इंटरनेशनल क्रुज का आनंद ले रहें हैं यही कारन हैं की क्रूज अब 'एलीट ट्रेवेल' से निकलकर कोम्फेर्टबिल हॉलिडे आप्शन बन गया हैं इसमें मुंबई –गोवा, कोच्ची –लक्षदीप, गंगा –ब्रम्हपुत्र नदी क्रूज सबसे ज्यादा बुक करवाएं जातें हैं इनमे थीम बेस्ट लक्जरी पॅकेज भी मिलतें हैं जिसमे फ्लाइट, होटल आदि का किराया भी शामिल होता हैं।

2. **टेम्पल टूरिजम कल्चर –** आजकल देश में धार्मिक पर्यटन में प्रिमियम याने महंगी सुविधाओं का विकल्प अपनाने में तेजी आ रही हैं ऐसी यात्राओं के दौरान सात से दस हजार रुपयें प्रति रात किराएँ वाले कमरों की बुकिंग चौबीस प्रतिशत तक बढ़ गयी हैं इससे अधिक कीमत वाले रूम की बुकिंग तेविस फीसदी बढ़ गयी हैं मेक माय ट्रिप की पिल्ग्रेमेज ट्रैवल ट्रेंड्स रिपोर्ट के अनुसार वित् वर्ष 2024 – 25 में 56 प्रमुख आध्यात्मिक स्थलों पर होटल और स्टे की बुकिंग में 19 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गयी हैं।इनमे से 34 गंतव्यों ने डबल – डिजिट ग्रोथ और 15 स्थानों ने 25 प्रतिशत से अधिक बढ़ोतरी दर्ज की हैं।

3. **विशेषीकृत पर्यटन –** इसमें एस्ट्रो टूरिज्म, हेरिटेज वाक, फेस्टिवल टूरिज्म और अर्द्धेंचार टूरिज्म आदि आतें हैं जिनका क्रेज बढ़ गया हैं।

4. **सतत और पर्यावरण –**अनुकूल पर्यटन द इसमें इको –टूरिज्म, ग्रीन पहल, जल सरक्षण आदि को ध्यान में रखते हुए पर्यटन किया जाता हैं।

निम्न वर्ग की मुख्य विशेषता के रूप में आर्थिक कमजोरी, कम आय, असुरक्षित रोजगार और पर्यटन पर कम खर्च करने की क्षमता आदि आती हैं जबकि मध्यम वर्ग में स्थिर आय, शिक्षित लोग, जीवन स्तर में सुधार की आकांक्षा, घूमना फिरना, पर्यटन करना उनकी जीवन शैली का हिस्सा होना आदि शामिल हैं।

पर्यटन और विभिन्न वर्ग – पहले पर्यटन केवल उच्च वर्ग तक सीमित था किन्तु आज सस्ता परिवहन, ऑनलाइन बुकिंग, कम बजट के होटल्स पैकेज टूर आदि के कारण माध्यम वर्ग तो बड़ी संख्या में यात्रा कर रहा हैं किन्तु निम्न वर्ग आज भी सीमित दायरे में केवल स्थानीय या धार्मिक यात्रा कर पाता हैं।

आज पर्यटन उद्योग का सबसे बड़ा लाभ माध्यम वर्ग के दुकानदारो, गाइड ड्राईवर, कारीगर, लोक कलाकार आदि को होता हैं जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार, आय का बढ़ना आदि सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं।

इसी प्रकार से मध्यम वर्ग पर्यटन को अपनी जीवन शैली का 'स्टेटस सिंबल'भी मानने लगा हैं।पर्यटन से आम लोगो में आत्मविश्वास बढ़ता हैं, आनन्द की प्राप्ति होती हैं सामाजिक दायरा भी बढ़ जाता हैं।

निष्कर्ष – पर्यटन मध्यम वर्ग के लिए तेजी से बढ़ता सांस्कृतिक और मनोरंजक अनुभव बन गया हैं जबकि निम्न वर्ग के लिए आय और रोजगार का बड़ा स्रोत हैं पर्यटन समस्त वर्गों में सामाजिक –आर्थिक विकास लाता हैं और हर वर्ग के लिए नये अनुभव और विकास के अवसर लाता हैं।

इस प्रकार से कहा जा सकता हैं की पर्यटन और समाज का गहरा रिश्ता हैं जहाँ पर्यटन समाज को आर्थिक लाभ और सांस्कृतिक लाभ देता हैं वहीं समाज की संस्कृति, विरासत और जीवन शैली पर्यटकों को आकर्षित करतीं हैं किन्तु पर्यटन से भीड़, प्रदुषण और स्थानीय संस्कृति की क्षति भी हो सकती हैं इसलिए संतुलन और सतत विकास बहुत जरूरी हैं ताकि पर्यटन समाज की बेहतरी में योगदान दे सकें।पर्यटन को दीर्घकालीन लाभदायक बनाना जरूरी हैं ताकि ये 'गंतव्य सरंक्षक' की भूमिका निभा सके और समस्त समाज और प्रकृति सुरक्षित रह सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1 सिंघल डॉ.कुमार प्रभात, 2022, पर्यटन और संग्रहालय,VSRD Acadmic Publishing.
2 माहेश्वरी, डॉ. दीप्ति, संजय बंसल, NEP– 2020, पर्यटन एवम यात्रा प्रबन्धन।
3 अग्रवाल, डॉ. गोपाल कृष्ण, 2024, समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा।

****